सहायक प्राध्यापक लिखित परीक्षा
पाठ्यक्रम--संस्कृत

इकाई–1
वैदिक साहित्य

I. देवता :
- अग्नि, सवितृ, विष्णु, इन्द्र, रूद्र, बृहस्पति, अश्विनी, वरूण, उषस्, सोम।

II. निम्नलिखित सूक्तों का अध्ययन :
- ऋग्वेद– अग्नि (1.1), इन्द्र (2.12), पुरूष (10.90), हिरण्यगर्भ (10.121), नासदीय (10.129), वाक् (10.125), वरूण (1.25), सूर्य (1.125), उषस् (3.61), पर्जन्य (5.83)।
  संवाद सूक्त– पुरूरवा उर्वशी, यम–यमी, सरमा–पणि, विश्वामित्र–नदी।
- शुक्ल यजुर्वेद– शिवसंकल्प (1.6), प्रजापति (1.5)।
- अथर्ववेद– राष्ट्राभिवर्द्धनम् (1.29), काल (10.53), पृथिवी (12.1)।

III.
- वैदिक काल के विषय में विभिन्न सिद्धान्त– मैक्समूलर, ए. वेबर, जैकोबी, बालगंगाधर तिलक, एम. विन्टरनिट्ज, भारतीय परंपरागत विचार।
- ऋग्वेद का क्रम
  संहिताएँ : विषय वस्तु
  संहिताओं के पाठ–भेद
  पदपाठ
  स्वर–उदात्त, अनुदात्त तथा स्वरित
  वैदिक एवं लौकिक संस्कृत में अंतर
  वैदिक व्याख्या–पद्धति– प्राचीन एवं अर्वाचीन।

IV.
- ब्राह्मण एवं आरण्यक :
  सामान्य लक्षण, विशेषताएँ
  प्रतिपाद्य विषय
  विधि एवं उसके प्रकार
  अग्निहोत्र अग्निष्टोम यज्ञ
  दर्शपौर्णमास यज्ञ एवं पंचमहायज्ञ
  आख्यान–शुनःशेप तथा वाङ्मनस्
  विभिन्न संहिताओं से ब्राह्मणग्रन्थों की सम्बद्धता।

V.
- उपनिषदों की विषयवस्तु तथा प्रमुख अवधारणाओं का अध्ययन। विशेषतः निम्नलिखित उपनिषदों के संदर्भ में :
  ईश, कठ, केन, बृहदारण्यक, तैत्तिरीय।

VI.
- वेदांगों का सामान्य परिचय
  शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरूक्त, छन्द, ज्योतिष।

- ऋक्–प्रातिशाख्य :
  निम्नलिखित परिभाषाएँ :
  सामानाक्षर, सन्ध्यक्षर, अघोष, सोष्म, स्वरभक्ति, यम, रक्त, संयोग, प्रगृह्य, रिफित।

- निरूक्त (अध्याय 1 और 2) :
  चार पद– नाम का विचार, आख्यात का विचार, उपसर्गों का अर्थ, निपातों की कोटियाँ
  क्रिया के छः रूप (षड्भावविकार)
  निरूक्त के अध्ययन के उद्देश्य
  निर्वचन के सिद्धान्त।

- निम्नलिखित शब्दों की व्युत्पत्तियाँ :
  आचार्य, वीर, ह्रद, गो, समुद्र, वृत्र, आदित्य, उषस्, मेघ, वाक्, उदक, नदी, अश्व, अग्नि, जातवेदस्, वैश्वानर, निघण्टु।

- निरूक्त (VII- अध्याय– दैवत काण्ड) :
  मन्त्रों के प्रकार
  देवताओं का स्वरूप
  देवताओं की संख्या।

इकाई–2
दर्शन

I.
- ईश्वरकृष्ण की सांख्यकारिका :
  सत्कार्यवाद, पुरूष–स्वरूप, प्रकृति–स्वरूप, सृष्टिक्रम, प्रत्ययसर्ग, कैवल्य।
- सदानन्द का वेदान्तसार :
  अनुबन्ध–चतुष्टय, अज्ञान, अध्यारोप–अपवाद, लिंगशरीरोत्पत्ति, पञ्चीकरण, विवर्त, जीवनमुक्ति।
- केशवमिश्र की तर्कभाषा/अन्नंभट्ट का तर्कसंग्रह :
  पदार्थ, कारण, प्रमाण–प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द।
  प्रमातृ, प्रमेय, प्रमाण और प्रमिति की अवधारणाओं का अध्ययन।
- लौगाक्षीभास्कर का अर्थसंग्रह।

II.
- योगसूत्र–व्यासभाष्य :
  चित्तभूमि, चित्तवृत्तियाँ, ईश्वर का स्वरूप, योगांग, समाधि, कैवल्य।
- वेदान्त : ब्रह्मसूत्र–शाङ्करभाष्य (1.1)।
- न्याय–वैशेषिक : न्यायसिद्धान्तमुक्तावली (अनुमानखण्ड)।
- सर्वदर्शन संग्रह–जैनमत, बौद्धमत।

इकाई–3

व्याकरण तथा भाषा विज्ञान

I.
- पाणिनीयशिक्षा।
- महाभाष्य (पस्पशाह्निक) :
  शब्द की परिभाषा
  शब्द एवं अर्थ संबंध
  व्याकरण के अध्ययन के उद्देश्य
  व्याकरण की परिभाषा
  साधु शब्द के प्रयोग का परिणाम
  व्याकरण की पद्धति।
- वाक्यपदीय (ब्रह्मकाण्ड) :
  स्फोट का स्वरूप, शब्द–ब्रह्म का स्वरूप, शब्द–ब्रह्म की शक्तियाँ, स्फोट एवं ध्वनि के बीच सम्बन्ध, शब्द–अर्थ सम्बन्ध, ध्वनि के प्रकार, भाषा के स्तर।

II.
- व्याकरण :
  परिभाषाएँ–संहिता, गुण, वृद्धि, प्रातिपदिक, नदी, धि, उपधा, अपृक्त, गति, पद, विभाषा, सवर्ण, टि, प्रगृह्य, सर्वनाम–स्थान, निष्ठा।
  समास : लघुसिद्धान्तकौमुदी के अनुसार।
- सिद्धान्तकौमुदी :
  परस्मैपदविधान, आत्मनेपदविधान
  तिङन्त (भू एवं एध् मात्र)
  कृदन्त (कृत्य प्रक्रिया मात्र)
  तद्धित (मत्वर्थीय)
  कारक प्रकरण
  स्त्री प्रत्यय।

III.
- भाषा विज्ञान–
  भाषा की पारिभाषा एवं प्रकार
  भाषा तथा वाक् में अंतर
  भाषा तथा बोली में अंतर
  भाषा का वर्गीकरण (परिवारमूलक एवं आकृतिमूलक)
  संस्कृत ध्वनियों के विशेष संदर्भ में मानवीय ध्वनि यंत्र
  भाषा की प्रक्रिया एवं ध्वनियों का वर्गीकरण– स्पर्श, संघर्षी, अर्धस्वर एवं स्वर।
  ध्वनि संबंधी नियम (ग्रिम, ग्रासमान, वर्नर)
  ध्वनि परिवर्तन के कारण
  अर्थ परिवर्तन की दिशाएँ तथा कारण
  वाक्य का लक्षण तथा भेद
  भारोपीय भाषा परिवार का सामान्य एवं संक्षिप्त परिचय
  भारतीय आर्यभाषा की तीन अवस्थाएँ।

इकाई–4
काव्यशास्त्र

I.
- भरत–नाट्यशास्त्र (प्रथम, द्वितीय तथा षष्ठ अध्याय), दशरूपक (प्रथम तथा तृतीय प्रकाश)

II.
- काव्यप्रकाश–काव्यलक्षण, काव्यप्रयोजन, काव्यहेतु, काव्यभेद, शब्दशक्ति, अभिहितान्वयवाद, अन्विताभिधानवाद, रसस्वरूप एवं रससूत्रविमर्श, रसदोष, काव्यगुण।
  अलंकार– अनुप्रास, श्लेष, वक्रोक्ति, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, समासोक्ति, अपह्नुति, निदर्शना, अर्थान्तरन्यास, दृष्टान्त, विभावना, विशेषोक्ति, संकर, संसृष्टि।
- साहित्यदर्पण : काव्य की परिभाषा, काव्य की अन्य परिभाषाओं का खण्डन, शब्दशक्ति–संकेतग्रह, अभिधा, लक्षणा, व्यंजना, रस (रस–भेद स्थायी भावों सहित), रूपक के प्रकार, नाटक के लक्षण, महाकाव्य के लक्षण।

III.
- ध्वन्यालोक (प्रथम उद्योत)।
- काव्यप्रकाश (द्वितीय तथा पञ्चम उल्लास)।
- वक्रोक्तिजीवितम् (प्रथम उन्मेष)।
- काव्यमीमांसा (1 से 5 अध्याय)।
- रसगंगाधर–प्रथम आनन (रसनिरूपणान्त)।

इकाई–5
संस्कृत साहित्य

I.
- रामायण

रामायण का क्रम
रामायण में आख्यान
रामायणकालीन समाज
परवर्ती ग्रन्थों के लिए रामायण एक प्रेरणा–स्रोत
रामायण का साहित्यिक महत्व।

- महाभारत

महाभारत का क्रम
महाभारत में आख्यान
महाभारतकालीन समाज
परवर्ती ग्रन्थों के लिए महाभारत एक प्रेरणा–स्रोत
महाभारत का साहित्यिक महत्व।

- पुराण

पुराण की परिभाषा
महापुराण एवं उपपुराण
पौराणिक सृष्टिविज्ञान
पुराण एवं लौकिक कलाएँ
पौराणिक आख्यान।

II.
- कौटिलीय अर्थशास्त्र (प्रथम दस अधिकार)

मनुस्मृति (प्रथम, द्वितीय तथा सप्तम अध्याय)
याज्ञवल्क्यस्मृति (व्यवहाराध्याय मात्र)।

III.
- अभिलेख
- पुरालिपि :

ब्राह्मीलिपि को पढ़ने का इतिहास
भारत में लेखन कला की प्राचीनता
ब्राह्मीलिपि की उत्पत्ति के सिद्धान्त
शिलालेख संबंधी सामग्री के प्रकार
गुप्त एवं अशोक काल की ब्राह्मीलिपि।

- अशोक के अभिलेख :

प्रमुख शिलालेख
प्रमुख स्तंभलेख
गुजर्रा लघु–शिलालेख
मास्कि शिलालेख
रूम्मिनदेई स्तंगलेख
कान्धार का द्विभाषी शिलालेख

- मौर्योत्तर काल के अभिलेख :
  कनिष्क के शासन वर्ष 3 का सारनाथ बौद्ध प्रतिमा लेख
  कनिष्क के शासन वर्ष 18 का मनकियाला अभिलेख
  नहपान के काल (वर्ष 41, 42, 45) का नासिक गुहा अभिलेख
  रूद्रदामन का गिरनार शिलालेख
  खारवेल का हाथीगुम्फा अभिलेख।
- गुप्ताकालीन एवं गुप्तोत्तरकालीन अभिलेख :
  समुद्रगुप्त का अलाहाबाद स्तंभ लेख
  चन्द्रगुप्त द्वितीय का वर्ष 61 का मथुरा शिलालेख
  चन्द्र का महरौली लौह स्तंभ लेख
  कुमारगुप्त प्रथम के काल का बिलसद स्तंभ लेख
  कुमारगुप्त प्रथम का वर्ष 128 का दामोदरपुर ताम्र पट्ट अभिलेख
  स्कन्दगुप्त का गिरनार शिलालेख
  स्कन्दगुप्त का इन्दौर ताम्र पट्ट अभिलेख
  स्कन्दगुप्त का भितरी स्तंभ अभिलेख
  तन्तुवाय श्रेणी का मन्दसौर शिलालेख
  प्रभावति गुप्ता का पूना ताम्र पट्ट अभिलेख
  तोरमाण का एरण अभिलेख
  मिहिरकुल का ग्वालियर अभिलेख
  यशोधर्मन–विष्णुवर्धन का मन्दसौर शिलालेख
  महानामन का बोधगया अभिलेख
  यशोवर्मदेव के काल का नालन्दा शिलालेख
  आदित्यसेन का अफसद शिलालेख
  जीवितगुप्त द्वितीय का देवबर्णारक अभिलेख
  धरसेन द्वितीय का मालिया ताम्र पट्ट अभिलेख
  ईशानवर्मन का हड़हा अभिलेख
  हर्ष का बांसखेड़ा ताम्र पट्ट अभिलेख
  पुलकेशी द्वितीय का ऐहोल शिलालेख
  प्रतिहार नृप मिहिरभोज का ग्वालियर अभिलेख।

इकाई–6
पद्य, गद्य तथा नाटक

I. निम्नलिखित ग्रन्थों का सामान्य अध्ययन :–

- पद्य : रघुवंश, मेघदूत, किरातार्जुनीय, शिशुपालवध, नैषधीयचरित, बुद्धचरित।
- गद्य : दशकुमारचरित, हर्षचरित, कादम्बरी।
- नाटक : स्वप्नवासवदत्ता कर्णभार, अभिज्ञानशाकुन्तल, मृच्छकटिक, उत्तरामचरित, मुद्राराक्षस, रत्नावली, वेणीसंहार।

II. निम्नांकित ग्रंथों का विशिष्ट अध्ययन–

- पद्य
  रघुवंश (प्रथम तथा चतुर्दश सर्ग)
  किरातार्जुनीय (प्रथम सर्ग)
  शिशुपालवध (प्रथम सर्ग)
  नैषधीयचरित (प्रथम सर्ग)।
- गद्य :
  दशकुमारचरित (अष्टमोच्छ्वासः)
  हर्षचरितम् (पञ्चमोच्छ्वासः)
  कादम्बरी (महाश्वेतावृत्तान्त)।

Assistant Professor Written Examination
Syllabus of Sanskrit

Unit-I
Vedic Literature

I. Deities
- Agni, Savitṛ , Viṣṇu, Indra, Rudra, Bṛhaspati, Aśvinā, Varuṇa, Uṣas, Soma

II. Study of the following hymns :
- Ṛgveda- Agni (1.1), Indra(2.12), Puruṣa(10.90), Hiraṇyagarbha(10.121), Nāsadīya(10.129), Vāk(10.125), Varuṇa (1.25), Sūrya (1.125), Uṣas (3.61), Parjanya (5.83)
  Dialogue Hymns- Pururavā-Urvaśī, Yama-Yamī, Saramā-Paṇi, Viśvāmitra-Nadī
- Śukla Yajurveda- Śivasaṅkalpa (1.6), Prajāpati (1.5)
- Atharvaveda- Rāṣṭrābhivardhanam (1.29), Kāla (10.53), Prthivi (12.1)

III.
- Main theories regarding the age of the Ṛgveda-Maxmüller, A. Weber, Jacobi, Balgangadhar Tilak, M. Winternitz, Indian traditional views.
- Arrangement of the Ṛgveda
  Subject matter of Saṁhitās
  Recensions of the Saṁhitas
  Padapātha
  Accent-Udātta, Anudātta and Svarita
  Points of difference between Vedic and Classical Sanskrit
  Schools of Vedic Interpretation-Traditional and Modern.

IV.
- Brāhmaṇas and Āraṇyakas :
  General characteristics, Peculiarities,
  Subject-matter
  Vidhi and its types
  Agnihotra and Agniṣṭoma Sacrifices, Darsapaurnmāsa Sacrifice,
  Pañchmahāyajñyas, Legends-Sunaḥ'sepa and Vāṅmanas
  Affilliation of the Brāhmaṇa texts with different Saṁhitās

V.
- Study of the contents and main concepts with special reference to the following Upaniṣads :
  Iśa, Kaṭha, Kena, Bṛhadāraṇyaka, Taittiriya

VI.
- General and brief introduction of Vedāṅgas
  Śikṣā, Kalpa, Vyākaraṇa, Nirukta, Chandas, Jyotiṣ
- Ṛkprātiśākhya :
  Definitions of the following :
  Samānakṣara, Sandhyakṣara, Aghoṣa, Soṣman, Svarabhakti, Yama, Rakta, Samyoga, Pragṛhya, Riphita

- Nirukta (Chapters I and II)
  Four-fold division of Padas-Concept of Nāma, Concept of Ākhyāta,
  Meaning of Upasargas, Categories of Nipātas
  Six states of Action (Ṣaḷbhāvavikāra)
  Purposes of the study of Nirukta
  Principles of Etymology
  Etymology of the following words :
  Ācārya, Vīra, Hrada, Go, Samudra, Vṛtra, Āditya, Uṣas, Megha, Vāk, Udak,
  Nadī, Aśva, Agni, Jātavedas, Vaiśvānara, Nighaṇṭu
- Nirukta (VII Adhyāya-Daivata Kāṇḍa)
  Types of Mantras
  Characteristics of Deities
  Number of Deities

Unit-II

Darsana

I.
- Sāṁkhyakārikā of Īśvarakṛṣṇa :
  Satkāryavāda, Puruṣa-svarūpa, Prakṛti-svarūpa, Sṛṣṭikrama, Pratyayasarga, Kaivalya
- Vedāntasāra of Sadānanda :
  Anubandha-catuṣṭaya, Ajñāna, Adhyāropa-Apavāda, Lingaśarīrotpatti, Pañcikaraṇa, Vivarta, Jīvanmukti
- Tarkabhāṣā of Keśavamiśra/Tarkasaṁgraha of Annambhaṭṭa :
  Padārtha, Kāraṇa, Pramāṇa, Pratyakṣa, Anumāna, Upamāna, Śabda
  A study of the concepts of Pramātṛ, Prameya, Pramāṇa and Pramiti

II.
- Yogasūtra-Vyāsabhāṣya
  Cittabhūmi, Cittavṛttis, Concept of Īśvara, Yogāṅgas, Samādhi, Kaivalya
- Vedānta : Brahmasūtra-Śāṅkarabhāṣya (1.1)
- Nyāya-Vaiśeṣika : Nyāyasiddhānta-Muktāvalī (Anumāna Khaṇḍa)
- Sarvadarśana-saṅgraha : Jainism, Buddhism

Unit-III
Grammar and Linguistics

I.
- Pāṇinīyaśikṣā
- Mahābhāṣya (Paspaśāhnika) :
  Definition of Śabda
  Relation between Śabda and Artha
  Purposes of the study of grammar
  Definition of Vyākaraṇa
  Result of the proper use of word
  Method of grammar
- Vākyapadīya (Brahmakāṇḍa)
  Nature of Sphoṭa, Nature of Śabda-Brahma, Powers of Śabda-Brahma, Relation between Sphoṭa and Dhavani, Relation between Sabda and Artha, Types of Dhvani, Levels of Language

II.
- Grammar
  Definitions-Saṁhitā, Guṇa, Vṛddhi, Prātipadika, Nadī, Ghi, Upadhā, Apṛkta, Gati, Pada, Vibhāṣā, Savarṇa, Ṭi, Pragṛhya, Sarvanāmasthāna, Niṣṭhā
  Samāsa : As per Laghusiddhāntakaumudī
- Siddhāntakaumudī
  Samāsa, Parasmaipadavidhāna, Ātmanepadavidhāna
  Tiṅanta (Bhū and Edh only)
  Kṛdanta (Kṛtya Prakriyā only)
  Taddhita (Matvarthīya)
  Kāraka
  Strī pratyaya

III.
- Linguistics :
  Definition and types of languages
  Difference between Bhāṣā and Vāk
  Difference between language and dialect
  Classification of languages (geneological and morphological)
  Speech-Mechanism with special reference to Sanskrit sounds
  Speech-mechanism and classification of sounds : stops, fricatives, semi-vowels and vowels.
  Phonetic laws (Grimm, Grassmann and Verner)
  Causes of phonetic-change
  Directions of semantic change and reasons of change
  Definition of Vākya and its types
  General and brief introduction of indo-European family of languages
  Characteristics of the three stages of Indo-Aryan

Unit-IV
Poetics

I.
- Nāṭyaśāstra of Bharata (I, II and VI Adhyāya), Daśarūpaka (I and III Prakāśa)

II.
- Kāvyaprakāśa-Kāvyalakṣaṇa, Kāvyaprayojana, Kāvyahetu, Kāvyabheda, Śabdaśakti, Abhihitānvayavāda, Anvitābhidhānavāda, Concept of Rasa and discussion of Rasasūtra, Rasadoṣa, Kāvyaguṇa
  Alaṁkāras-Anuprāsa, Śleṣa, Vakrokti, Upamā, Rūpaka, Utprekṣā Samāsokti, Apahnuti, Nidarśanā, Arthāntaranyāsa, Dṛṣṭānta, Vibhāvanā, Viśeṣokti, Saṅkara, Sansṛṣṭi
- Sāhityadarpaṇa : Definition of Kāvya, Refutation of other definitions of Kāvya, Śabdaśakti- Saṅketagraha, Abhidhā, Lakṣaṇā, Vyanjanā, Rasa- Types of Rasas with their sthāyī Bhāvas, Types of Rūpaka, Characteristics of Nāṭaka, Characteristics of Mahākāvya

III.
- Dhvanyāloka (I Udyota)
- Kāvya-prakāśa (II and V Ullāsa)
- Vakroktijīvitam (I Unmeṣa)
- Kāvyamīmāṁsā (I to V Adhyāyas)
- Rasagangādhara (I Ānana up to Rasanirūpaṇa)

Unit-V
Sanskrit Literature

I.
- Rāmāyaṇa
  - Arrangement of the Rāmāyaṇa
  - Legends in the Rāmāyaṇa
  - Society in the Rāmāyaṇa
  - Rāmāyaṇa as a source of later Sanskrit works
  - Literary value of the Rāmāyaṇa
- Mahābhārata
  - Arrangement of the Mahābhārata
  - Legends in the Mahābhārata
  - Society in the Mahābhārata
  - Mahābhārata as a source of later Sanskrit works
  - Literary value of the Mahābhārata
- Purāṇas
  - Definition of Purāṇa
  - Mahāpurāṇas and Upapurāṇas
  - Purāṇic cosmology
  - Purāṇas and Secular Arts
  - Purāṇic legends

II.
- Kauṭilīya Arthaśāstra (First ten Adhikāra)
- Manusmṛti (I, II, and VII Adhyāyas)
- Yājñavalkyasmṛti (Vyavahārādhyaya only)

III.
- Inscriptions
- Palaeography :
  - History of the decipherment of the Brāhmī Script
  - Antiquity of the art of writing in India
  - Theories of the origin of the Brāhmī Script
  - Types of Epigraphical records
  - Brāhmī Script of the Mauryan and Gupta periods
- Inscriptions of Aśoka :
  - Major Rock Edicts
  - Major Pillar Edicts
  - Gujarrā Minor Rock Edict
  - Maski Rock Edict
  - Rummindel Pillar Edict
  - Bilingual Inscription from Kāndhāra
- Post-Mauryan Inscriptions :
  - Sāranātha Buddhist Image inscription of Kaniṣka's regal-year, 3
  - Mankiālā inscription of Kaniṣkas regal-year, 18
  - Näsik Cave inscription of Nahapānas time (years 41, 42, 45)
  - Girnār Rock inscription of Rudradāman
  - Hāthīgumphā inscription of khāravela

- Gupta and post-Gupta inscriptions :

Allahabad Pillar inscription of Samudragupta
Mathura Stone inscription of Chandragupta II's reign- year 61
Mehrauli Iron Pillar inscription of Chandra
Bilsad Pillar inscription of the time of Kumāragupta
Damodarpur Copper Plate inscription of Kumāragupta – year 128
Girnār Rock inscription of Skandagupta
Indore Copper Plate inscription of Skandagupta
Bhitari Pillar inscription of Skandagupta
Mandasor Stone Inscription of the Guild of silk weavers.
Poona Copper Plate inscription of Prabhāvatī Guptā
Eran inscription of Toramāṇa
Gwalior inscription of Mihirakula
Mandasor Pillar inscription of Yasodharman
Mandasor Stone inscription of Yaśodharman-Viṣṇuvardhana
Bodhagaya inscription of Mahānāman
Nalanda Stone inscription of the time of Yaśovarmadeva
Aphesad Stone inscription of Ādityasena
Deobarnāka inscription of Jīvitagupta II
Māliyā Copper Plate inscription of Dharasena II
Haṛahā inscription of Īśānavarman
Banāskherā Copper Plate inscription of Harṣa
Alhol Stone inscription of Pulakeśin II
Gwalior inscription of Pratihāra King Mihirbhoja

Unit-VI
Prose, Poetry and Drama

I. General study of the following works :

- Poetry : Raghuvaṁśa, Meghadūta, Kirātārjunīya, Śiśupālavadha, Naiṣadhiyacarita, Buddhacarita
- Prose : Daśakumāracarita, Karnabhāra, Hṛṣacarita, Kādambarī
- Drama : Svapnavāsavadattā, Abhijñānaśākuntala, Mṛcchakaṭika, Uttararāmacarita, Mudrārākṣasa, Ratnāvalī, Veṇīsaṃhāra

II. Special study of the following works :

- Poetry :
  Rághuvaṁśa (I and XIV Cantos)
  Kirātārjunīya (I Canto)
  Śiśupālavadha (I Canto)
  Naiṣadhīyacarita (I Canto)
- Prose :
  Daśakumāracaritam (VIII Ucchvāsa)
  Harṣacaritam (V Ucchvāsa)
  Kādambarī (Mahāśvetā Vṛttānta)